"बस्तर जिले के शालेय वातावरण एवं अध्ययन आदतों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन"

1. **डॉ. श्रीमती संगीता सराफ,** एसोसिएट प्रोफेसर, मैट्स स्कूल ऑफ एजुकेशन, मैट्स यूनिवर्सिटी, रायपुर (छ.ग.)
2. **सुश्री हेमलता नागेश,** मैट्स स्कूल ऑफ एजुकेशन मैट्स यूनिवर्सिटी, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बस्तर जिले के शालेय वातावरण एवं अध्ययन आदतों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना है । बस्तर जिले के हाईस्कूल में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति उनकी शालेय वातावरण के प्रति धारणा तथा अध्ययन आदतों से निर्धारित होती है एवं बस्तर जिले के हाईस्कूल में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बहिर्मुखी–अंतर्मुखी व्यक्तित्व भी उनकी शालेय वातावरण के प्रति धारणा तथा अध्ययन आदतों से निर्धारित होता है ।

प्रस्तावना

वर्तमान समय में शिक्षा स्थिर नहीं है यह एक गतिशील प्रक्रिया है। शिक्षा और समाज का साथ–साथ चलना आवश्यक है। जब–जब समाज में परिवर्तन होता है तब–तब शिक्षा में परिवर्तन होना आवश्यक है।

भारत की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक स्थिति का अवलोकन किया जाय तो हमें एक विचित्र चित्र देखने को मिलता है। आर्थिक दृष्टि से भारत बहुत पिछड़ा है। सांस्कृतिक दृष्टि से भारतीय अपनी संस्कृति को घृणा की दृष्टि से देखते है। राजनैतिक दृष्टि से लोकतन्त्र को शासन के रूप से ग्रहण किया गया है। वस्तुतः प्रजातन्त्र के नाम पर जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भाई–भतीजावाद, क्षेत्रीयता आदि का बोलबाला है। अतः प्रजातन्त्र को सफल बनाने के लिए शिक्षा की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए। इन सम्पूर्ण परिस्थितियों को ध्यान में रखकर शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण किया जाना चाहिए।

जीवन का अस्तित्व एवं निरन्तरता बनाये रखने के लिउ कुछ जन्मजात प्रकृत्तियों को लेकर उत्पन्न होती हे। शिक्षा द्वारा उसकी जन्मजात प्रवृत्तियों का शोधन एवं मागीन्तरीकरण होता है। और वह एक सामान्य प्राणी से बौद्विक एवं सामाजिक प्राणी बन जाता है। स्पष्ट है कि शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा ही मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशला में वृद्वि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। और उसे सम्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। यह

कार्य जन्म से ही नहीं बल्कि मां के गर्भ से ही शुरू हो जाता है। जन्म के पूर्व यह अनौपचारिक रूप में स्थित रहता है, और जन्म के पश्चात् औपचारिक रूप में स्थित रहता है और जन्म के पश्चात् औपचारिक रूप ग्रहण कर लेता है।

प्राणी है। अतः मनुष्य ने आदिम और बर्बर जीवन को त्याग कर सभ्य एवं सुसंस्कृत जीवन व्यतीत करना प्रारंभ कर दिया है। वास्तव से यह सब शिक्षा की ही देन है। इस प्रकार की शिक्षा मानव विकास के लिए आवश्यक ही नही वरन् उसके जीवन की आधारशीला है।

व्यक्ति अपने जन्म के समय असहाय होता है और दूसरों की सहायता से अपनी आवश्यकताओं को पूरा करता है। जैसे–जैसे वह बड़ा होता है, वैसे वैसे वह उनको पूरा करना और अपने वातावरण में अनुकूलन करना सीखता है। इन कार्यो को शिक्षा उसे विशेष योग देती है–। शिक्षा न केवल उवे अपने वातावरण से अनुकूलन करने मे सहायता देती है, वरन् उसके व्यवहार में ऐसे वांछनीय परिवर्तन भी करती है, कि वह अपना और अपने समाज का कल्याण करने में सफल होता है। शिक्षा इन कार्यो को सम्पन्न करके ही सच्ची शिक्षा कहलाने की अधिकारिणी हो सकती है।

वर्तमान में शहरी शालाओं का वातावरण इतना प्रभावशाली होता है कि छात्र अपने को अधिका प्रभावशाली मानते है। शहरो में पढ़ाई आधुनिक तकनीकों से पढ़ाई जाती है। जिसमें छात्र अधिम मन लगाकर और शाला आने में बाध्य हो जाते है। शालाओं में छात्रों को शिक्ष इंटरनेट, चार्ट, मॉडल, भ्रमण आदि से सिखाया व पढ़ाई जाता है। परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ाई पुरानी पद्धति से पढ़ाई जाती है। आधुनिक साधनों का अभाव होता है। जिसमें छात्र सिखने में उदासीन होते है। ग्रामीण क्षेत्रों में आदीवासी लोग ज्यादा रहते है आशिक्षित व रूढ़िवादी होते है। वे अपने बच्चों को शालेय भेजने में असमर्थ होते है।

''बस्तर जिले के शालेय वातावरण एवं अध्ययन आदतों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन'' का विषय इन्हीं कारणों को खोजने व प्रभावहीन बनाने के लिए किया गया है।

प्रयुक्त पदों की प्रकार्यात्मक परिभाषाएं

शालेय वातावरण :–

शिक्षा का परम उद्देश्य बालक का सर्वागीण विकास करना है। यह विकास तभी संभव है जब उन्हे अच्छे वातावरण को रखा जाय। यह वातावरण ऐसा हो जिसमें बालक की वंशानुक्रमीय विशेषताओं का सही प्रकाशन हो सके।

वातावरण शब्द के स्थान पर आज पर्यावरण को प्रयुक्त किया जाने लगा हैं, यदि हम पर्यावरण शब्द की सन्धि के आधार पर व्याख्या करें तो परि+आवरण होगा अर्थात् चारों ओर से घेरने वाला या ढकने वाला। अतः हम कह सकते है कि वातावरण वह वस्तु है जो व्यक्ति को चारो ओर से ढक कर आकर्षण उत्पन्न करती है। बालक के विकास के लिए वातावरण की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षा शास्त्रियों द्वारा वातावरण का अध्ययन किया गया और उसे निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया गया है–

- "वातावरण वह प्रत्येक वस्तु है जो व्यक्ति के जीन्स के अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु को प्रभावित करती है।"
- "एक व्यक्ति के वातावरण से तात्पर्य उन सभी उत्तेजनाओ के योग से है, जिनको वह जन्म से मृत्यु तक ग्रहण करता है।"
- "वातावरण में वे सभी बाह्य तत्व आ जाते है, जिन्होनें व्यक्ति को अपना जीवन आरम्भ करने के समय से प्रभावित किया है।"

उपरोक्त मतो से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति को प्रभावित करने वाली सभी उत्तेजनाएँ जो व्यक्ति के विकास एवं सम्बर्द्धन में सहायक होती है, वातावरण कहलाती है।

अध्ययन आदत :–

अध्ययन आदतों से सम्बन्धित एक अन्य स्थिति है रूचि, नई–नई बातों को जानने की रूचि, पाठ्यक्रम के विषय का पढ़ने की रूचि इत्यादि बातें व्यक्ति को बार–बार पढ़ने की ओर प्रेरित करती है। यहि प्रेरणा उसके अध्ययन को समुचित गति प्रदान करती है। रूचि की कमी छात्र में टालने की प्रवृत्ति को जन्म देती है और छात्र पढ़ाई को भी टालने का प्रयास करता रहता है। इस प्रकार उनमें अध्ययन आदतों का विकास अवरूद्ध हो जाता है।

"सीखना आदतों के निर्माण की प्रक्रिया है। ''

"अध्ययन सीखने का एक सम्पूर्ण प्रयास है।''

"आदत एक सीखा हुआ कार्य या अर्जित व्यवहार है जो स्वतः होता है।''

"आदत कार्य का वह रूप है जो आरम्भ में स्वेच्छा से और जान बूझकर किया जाता है पर जो बार–बार किये जाने के कारण स्वतः होता है।''

''व्यवहार द्वारा अर्जित समस्त परिवर्तन जो अनुभव द्वारा प्राप्त होता हैं आदत कहलाते हैं।''

इस प्रकार अध्ययन और आदत दोनों की परिभाषाओं के आधार पर अध्ययन आदतों की परिभाषा इस प्रकार है – अध्ययन आदतों से तात्पर्य स्वयं चलित मानसिक और आंगिक प्रतिक्रियाओं से है जो अधिगम स्थितियों में बार–बार दोहराने से अर्जित व प्रकट होती है। इन प्रतिक्रियाओं का सम्बन्ध नये ज्ञान (कौशल) की प्राप्ति से या प्राप्त ज्ञान, कौशल के प्रयोग दोनों से होता है।

आदत उस व्यवहार को दिया जाने वाला नाम है जो इतनी अधिक बार दोहराया जाता है कि यंत्रवंत् हो जाता है। आदत कार्य का वह रूप है जो आरंभ में स्वेच्छा से और जान बूझकर किया जाता है। पर जो बार–बार किए जाने के कारण स्वतः होता है। आदतें व्यवहार करने की और परिस्थितियों एवं समस्याओं का सामना करने की निश्चित विधियॉ होती हैं।

आदत बालाकों में जीवन के अधिक महत्वपूर्ण कार्यों के लिए समय और मानसिक शक्ति की बचत करने की क्षमता उत्पन्न करती है। शिक्षा और सीखने में आदत की उपयोगिता की पुष्टि अनेक तथ्यों से की है। शैक्षिक प्रयोगों में यह प्रमाणित किया है कि शिक्षकों को बालकों में आदतों का निर्माण करने के बजाय शिक्षण की अधिक प्रभावशाली विधियों को खोजना और प्रयोग करना चाहिए। आदत का निर्माण केवल संतोष का चिन्ह है और जब आदतों का निर्माण हो जाता है। तब अधिगम और उन्नति का कार्य अवरूद्ध हो जाता है।"

अध्ययन आदतों पर प्रभाव डालने वाली स्थितियों में सबसे पहले योजना को लेते है। यदि व्यक्ति के अध्ययन का कार्यक्रम आदत के रूप में ही योजनाबद्ध होता है तो यह निश्चित है कि वह निश्चित समय पर एंव निश्चित वस्तु स्मरण के लिए समय अवश्य प्रदान करेगा और अपना कार्य समय पर सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकेगा। इस प्रकार योजना बनाने की आदत उसके अध्ययन में अवश्य निखार लाने वाली प्रमाणित होगी।

व्यक्तित्व :–

व्यक्तित्व मानवीय व्यवहार का प्रतिमान है जो किसी परिस्थिति–विशेष के प्रत्युत्तर में किये जाते है जो परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होते रहते हे तथा जिसका उस परिस्थिति विशेष से अलग कोई अस्तित्व नहीं होता। व्यक्ति के तत्वों जैसे व्यक्ति के व्यवहार को निर्धारित करने तथा उसे स्थायी रूप देने में जो तत्व काम आते है, उन सभी का योग तथा परिणाम व्यक्ति की समग्र छति के विषय में एक धारणा प्रस्तुत करता है। यही धारणा व्यक्तित्व कहलाती है।

आदिवासी बालको का व्यक्तित्व

बस्तर के छात्रो का व्यक्तिव बहुत तो तरल एवं सुगम होता है। छात्रों को पढ़ायी मे कम रूची होती है क्योंकि वे अपने और अपने परिवार के रोजी रोटी के लिए हमेशा तैयार रहते है वे पढ़ाई के साथ–साथ मजदूरी एवं अन्य नौकरिया (छोटी–मोटी) करने को तैयार हो जाते है। जिनमे उनका मानसिक विकास और शिक्षा से रूचि कम हो जाती है। और वे सामान्य व्यक्तिव वाले ही रह जाते है। इनका व्यक्तित्व प्रतिभशाली बालक एवं सामान्य बालक मे ही तुलना करता रहता है। ये बालक अधिकता समस्पात्यक व्यक्तित्व के हो जाते है क्योंकि इन्हें किसी भी तरह अपनी समस्याओ से निपटना होता है इतना व्यक्तित्व कभी–कभी किसी समय पर निर्थक भी हो जाता है। क्योकि वे अपने परिवार एवं अपने लिए कुछ भी नही कर पाते है।

बस्तर के कुछ शहरी क्षेत्रों के बालको का व्यक्तित्व अधिक प्रतिभाशाली होता है क्योंकि अधिक रूचि अपने पढ़ाई के साथ–साथ कार्यो को करने की ललक क्षमता होती है। छात्र अपने माता–पिता के सहयोग से अपनी अलग पहचान व्यक्तित्व बनाने के उत्साह के साथ कोई कीर्ति जरूर प्राप्त करते है। इससे उनकी रूचि एवं व्यक्तित्व होगे को सामने लाने का समय मिलता है। जिससे वे अधिक प्रतिभाशाली हो सके। शहरी क्षेत्रों मे बालको को किसी प्रकार की मजदूरी या पारिवारिक परेशानीयों का सामना नहीं करना पडता जिससे वे अपनी पढ़ायी अपनी रूचि के अनुसार करते रहते है।

बस्तर में आदिवासी जनजातियॉ अधिक निवास करती है। जनजातिया अपने किसी भी जनजीवन में किसी भी प्रकार का कोई बदलाव या परिवर्तन नहीं चाहते है। इसका व्यवहार परम्पराऍ रीति रिवाज एवं संस्कृति जैसी है वैसा रखना चाहते है। बस्तर जनजातियॉ अधिकतर गॉव में एवं पहाडियो क्षेत्रो में निवास करते है। उनका पूरा जीवन वही व्यतित होता है। वे बाहरी दुनिया से परिचित ही नहीं होना चाहते इनमें से कुछ क्षेत्र नक्सल प्रभावित होते है। जिससे उनका कोई भी विकास नहीं हो पाता।

शैक्षिक अभिवृत्ति :–

व्यक्ति की अभिक्षमता का कारण अभिरूचि भी है। व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। यह एक मनो–सामाजिक प्रत्यय है। हम विभिन्न परिस्थितियों में जैसा का व्यवहार करते है उसकी अभिवृत्ति द्वारा जैसा निश्चित होती है।

अभिवृत्तियों के ज्ञान की सहायता से व्यक्ति के व्यवहार का पूर्व आकलन व विश्लेषण करना संभव होता है। मनोविज्ञानर, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र जैसे सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन में अभिवृत्तियों को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है।

अभिवृत्ति की परिभाषा तथा अर्थ :–

अभिवृत्ति अपने मनोभावों तथा विश्वासों को इंगित करती है। इससे ज्ञात होता है कि व्यक्ति तथा क्या सोच रहा है। अथवा उसका पूर्व विश्वास क्या है ?

''अभिवृत्ति किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु से संबंधित धनात्मक अथवा ऋणात्मक भाव है''

''अभिवृत्ति किसी परिस्थिति, व्यक्ति या वस्तु के प्रति किसी विशेष ढंग से, किसी विशेष सघनता से प्रतिक्रिया करने की तत्परता है।''

''अभिवृत्ति किन्ही परिस्थितियों, व्यक्तियों या वस्तुओं के प्रति संगत ढेग से प्रतिक्रिया करने के स्वाभाविक तत्परता है, जिसे सीख लिया गया है तथा जो व्यक्ति के द्वारा प्रतिक्रिया करने का विशिष्ट ढंग से बन गया है''

उपरोक्त परिभाषा के आधार पर स्पष्ट है अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यक्तित्व की वे प्रवृत्तियॉ है जो उसे किसी वस्तु, व्यक्ति आदी के संबंध में किसी विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रदर्शित करने का निर्णय लेने के लिए प्रेरित करती है। अभिवृत्ति व्यक्ति के दैनिक जीवन अर्जित अनुभवों को सामान्यीकृत करने के फलस्वरूप निर्माण होता है।

अभिवृत्ति व्यवहार को एक निश्चित दिशा प्रदान करने के लिए उत्तरदायी है अगर किसी को किसी वस्तु के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है तो वह उस वस्तु के प्रति आकर्षित होगा, उसे पाने का प्रयत्न करेगा और अगर नकारात्मक अभिवृत्ति हुई तो वह उससे दूर भागेगा। इसलिए छात्रों तथा अन्य वांछनीय निर्माण करने का प्रयास करना चाहिए।

अध्ययन का उद्देश्य

1. शालाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का उनके व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शालाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

1. बकावंड एवं जगदलपुर ब्लॉक के हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।
2. बकावंड एवं जगदलपुर ब्लॉक के हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का सार्थक प्रभाव उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति पर नहीं दिखायी देगा ।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन मे अनुसंधानकर्ता ने बस्तर जिले के शासकीय हाईस्कूलों को लिया है। शासकीय हाई स्कूलों की संख्या 76 और इसमें अध्ययनरत विषार्थियों की संख्या 8727 है। शोधकर्ता में बस्तर जिले के बकावण्ड बलॉक एवं जगदलपुर ब्लॉक के हाई स्कूलों का चयन कर कुल 500 विघार्थियों का चयनकिया गया है।

न्यादर्श

कुल 10 विद्यालयों से छात्र–छात्राओं की संख्या ग्रामीण क्षेत्र 411 एंव शहरी क्षेत्र 681 है। कुल योग 1092 है। जिसमें से शोघकर्ता ने 500 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श हेतु किया है।

चर

प्रस्तुत शोध अध्ययन के चर निम्नानुसार हैं :–

1. **स्वतंत्र चर**

   - शालेय वातावरण
   - अध्ययन आदत

2. **आश्रित चर**

   - व्यक्तित्व
   - शैक्षिक अभिवृति

उपकरण :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शालेय वातावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति व्यक्तित्व तथा अध्ययन आदतों में मापन के लिए मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया है। जिसकी सूची निम्न प्रकार से है:–

क्र0	उपकरण	निर्माण कर्ता
01	शालेय वातावरण सूची SEI-M	डॉ. करूणा शंकर मिश्रा
02	अध्ययन आदत का मापनी SHS-DRMJ	डिम्पल रानी डॉ. एम. एल. जयदका
03	व्यक्तित्व मापनी JEPI	प्रोफेसर आर.डी. हेलोडे
04	शैक्षिक अभिवृत्ति मापनी ASTE-CS	डॉ. एस. एल. चौपरा

सांख्यिकीय अभिप्रयोग :–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकों के द्वारा प्रदत्तो का विश्लेषण किया गया है–

1. मध्यमान (Mean)
2. मानक विचलन (SD)
3. टी परीक्षण (t-test)
4. सहसम्बंध (r)
5. एनोवा (ANOVA)

परिकल्पना क्रमांक H_1 :-

बकावंड एवं जगदलपुर ब्लॉक के हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा । इस परिकल्पना के सत्यापन के लिये तालिका क्रमांक 1.1(अ) में शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों के मध्य बहिर्मुखी–अंतर्मुखी व्यक्तित्व आयाम तथा तालिका क्रमांक 1.1(ब) में शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों के मध्य मनःस्नायु विकृति व्यक्तित्व आयाम की तुलना दी गयी है जिसमें independent sample student 't' test का उपयोग कर परिणाम निकाले गये हैं ।

तालिका क्रमांक 1.1 (अ)

शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों के मध्य बहिर्मुखी–अंतर्मुखी व्यक्तित्व (Extraversion-Introversion) आयाम की तुलना

चर	शहरी विद्यालयों के विद्यार्थी (N=250)		ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थी (N=250)		Mean Difference	't'	सार्थकता का स्तर
	Mean	S.D.	Mean	S.D.			
बहिर्मुखी–अंतर्मुखी व्यक्तित्व	13.14	2.71	11.34	3.29	1.80	6.66	.01

t(df=498) at .05 level 1.96 and 2.59 at .01 level

तालिका क्रमांक 1.1(अ) के अनुसार शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों का बहिर्मुखी–अंतर्मुखी व्यक्तित्व आयाम पर मध्यमान 13.14 तथा प्रमाप विचलन 2.71 है । ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों के समूह में बहिर्मुखी–अंतर्मुखी व्यक्तित्व आयाम पर मध्यमान 11.34 तथा प्रमाप विचलन 3.29 है । दोनों समूहों के मध्य मध्यमान में अंतर 1.80 है तथा शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थी, ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों की तुलना में बहिर्मुखी व्यक्तित्व के हैं । t=6.66 का मान भी सारणी में दिये गये मान t(df=498) = 2.59 at .01 level से अधिक है । तुलनात्मक रूप से शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों बहिर्मुखी–अंतर्मुखी व्यक्तित्व से संबंधित सांख्यिकीय मान आरेख क्रमांक 1.01 में भी दिये गये हैं ।

आरेख 1.01

शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों की बहिर्मुखी–अंतर्मुखी व्यक्तित्व से संबंधित सांख्यिकीय मान का स्तंभ आरेख

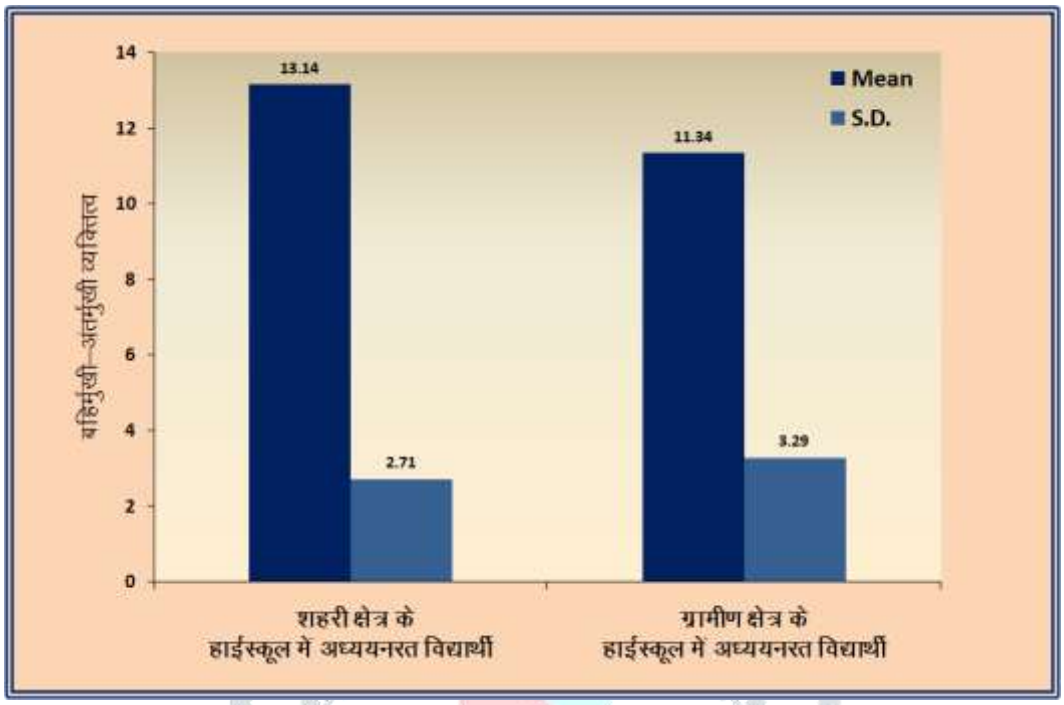

तालिका क्रमांक 1.1(ब) में शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों के मध्य व्यक्तित्व आयाम मनःस्नायु विकृति (Neuroticism) की तुलना दी गयी है जिसमें independent sample student 't' test का उपयोग कर परिणाम निकाले गये हैं

तालिका क्रमांक 1.1(ब)

शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों के मध्य मनःस्नायु विकृति व्यक्तित्व आयाम की तुलना

चर	शहरी विद्यालयों के विद्यार्थी (N=250)		ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थी (N=250)		Mean Difference	't'	सार्थकता का स्तर
	Mean	S.D.	Mean	S.D.			
मनःस्नायु विकृति	9.08	2.67	10.18	3.29	1.10	3.29	.01

t(df=498) at .05 level 1.96 and 2.59 at .01 level

तालिका 1.1(ब) एवं आरेख क्रमांक 4.5 के अनुसार शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों का व्यक्तित्व आयाम मनःस्नायु विकृति पर मध्यमान 9.08 तथा प्रमाप विचलन 2.67 है । ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों के समूह में व्यक्तित्व आयाम मनःस्नायु विकृति पर मध्यमान 10.18 तथा प्रमाप विचलन 3.29 है । दोनों समूहों के मध्य मध्यमान में अंतर 1.10 है तथा शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों में मनःस्नायु

विकृति का स्तर, ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों की तुलना में कम है । t=3.29 का मान भी सारणी में दिये गये मान t(df=498) = 2.59 at .01 level से अधिक है ।

तुलनात्मक रूप से शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व आयाम मनःस्नायु विकृति से संबंधित सांख्यिकीय मान आरेख क्रमांक 1.02 में भी दिये गये हैं।

आरेख क्रमांक 1.02

शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व आयाम मनःस्नायु विकृति से संबंधित सांख्यिकीय मान का स्तंभ आरेख

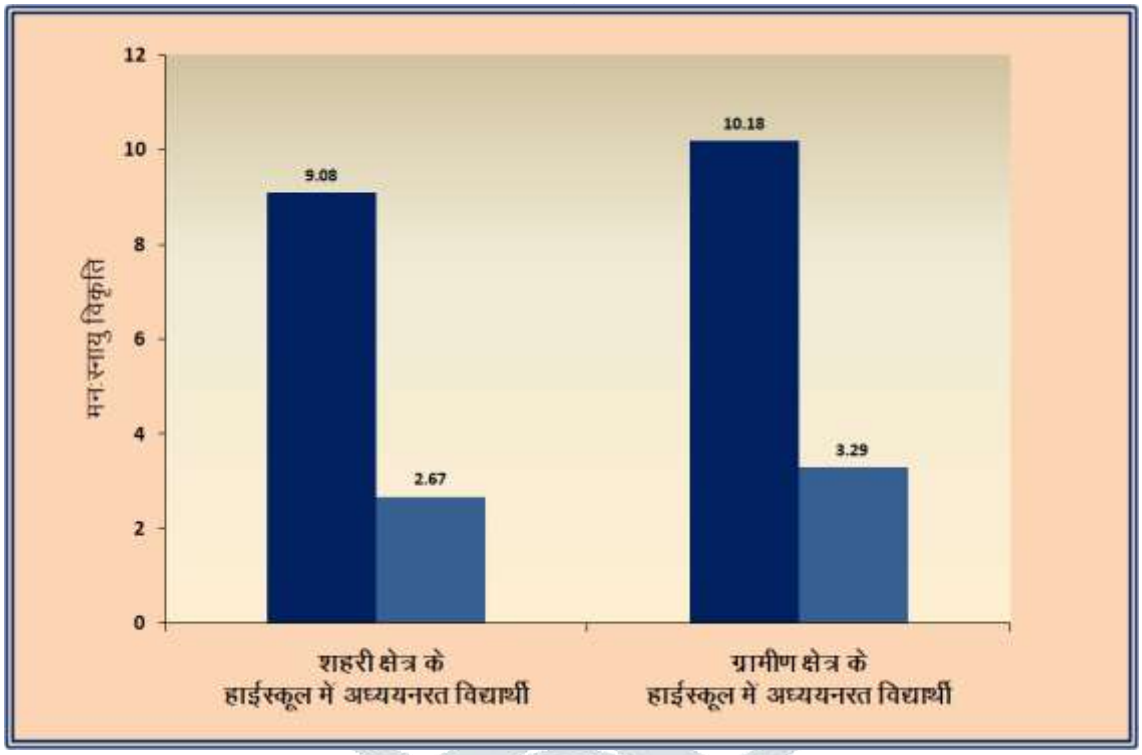

तालिका क्रमांक 1.1(अ) के अनुसार शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थी, ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों की तुलना में .01 के सार्थकता स्तर पर बहिर्मुखी व्यक्तित्व के हैं जबकि तालिका क्रमांक 1. 1(ब) के अनुसार शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों में मनःस्नायु विकृति का स्तर, ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों की तुलना में .01 के सार्थकता पर कम पाया गया, **अतः परिकल्पना क्रमांक H_1 अस्वीकार्य है ।**

परिकल्पना क्रमांक H_2 :_बकावंड एवं जगदलपुर ब्लॉक के हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का सार्थक प्रभाव उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति पर नहीं दिखायी देगा । इस परिकल्पना के सत्यापन के लिये तालिका क्रमांक 1.2 में हाईस्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शालेय वातावरण के प्रति धारणा एवं शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सहसंबंध गुणांक को दर्शाया गया है ।

तालिका क्रमांक 1.2

हाईस्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शालेय वातावरण के प्रति धारणा तथा शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य सहसंबंध

चर	N	'r'
शालेय वातावरण के प्रति धारणा	500	0.702**
शैक्षिक अभिवृत्ति	500	

r(df=498) at .05 level 0.088 and 0.115 at .01 level

तालिका क्रमांक 1.2 के अनुसार हाईस्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शालेय वातावरण के प्रति धारणा एवं शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य सहसंबंध गुणांक r=0.702 है जो कि सांख्यिकीय रूप से .01 के सार्थकता स्तर पर सिद्ध है ।

गणना किये गये सहसंबंध गुणांक का मान भी सारणी में दिये गये मान r(df=498) = 0.115 at .01 level से अधिक है ।

प्राप्त परिणामों के अनुसार शालेय वातावरण स्केल में अंकों पर वृद्धि होने पर विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति स्केल पर अर्जित अंकों में भी वृद्धि होती है जो कि यह दर्शाता है कि शालेय वातावरण के विद्यार्थियों के परिप्रेक्ष्य में अनुकूल होने पर उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति में भी सुधार होता है ।

तालिका क्रमांक 1.2 के अनुसार बकावंड एवं जगदलपुर ब्लॉक के हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों की शालेय वातावरण के प्रति धारणा एवं शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य .01 के सार्थकता स्तर पर धनात्मक सहसंबंध पाया गया, **अतः परिकल्पना क्रमांक H_2 अस्वीकार्य है ।**

परिकल्पनाओं का सत्यापनः

H_1 **बकावंड एवं जगदलपुर ब्लॉक के हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।**

तालिका क्रमांक 1.1(अ) के अनुसार शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थी, ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों की तुलना में .01 के सार्थकता स्तर पर बहिर्मुखी व्यक्तित्व के हैं जबकि तालिका क्रमांक 1.1(ब) के अनुसार शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों में मनःस्नायु विकृति का स्तर, ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों की तुलना में .01 के सार्थकता पर कम पाया गया, **अतः परिकल्पना क्रमांक H_1 अस्वीकार्य है ।**

H_2 बकावंड एवं जगदलपुर ब्लॉक के हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का सार्थक प्रभाव उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति पर नहीं दिखायी देगा ।

तालिका क्रमांक 1.2 के अनुसार बकावंड एवं जगदलपुर ब्लॉक के हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों की शालेय वातावरण के प्रति धारणा एवं शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य .01 के सार्थकता स्तर पर धनात्मक सहसंबंध पाया गया, **अतः परिकल्पना क्रमांक H_2 अस्वीकार्य है ।**

निष्कर्ष :

1. शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूलों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक भिन्नता पायी गयी।
2. शालेय वातावरण एवं अध्ययन आदतें संयुक्त रूप से हाईस्कूल में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति को प्रभावित करती हैं ।

सुझाव :

1. शालेय वातावरण का आदिवासी विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता पर प्रभाव का भविष्य में आंकलन संभावित है ।
2. शालेय वातावरण का आदिवासी विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक आयामों पर प्रभाव का भविष्य में आंकलन संभावित है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- पाण्डेय, डॉ रामशकल, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक विनोद पुस्तक, मन्दिर आगरा–2
- माथुर, डॉ.एस.एस., शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2
- राय, पारमनाथ सी.जी. अनुसंधान परिचय, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2
- पाठक, पी0डी0, शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंन्दिर आगरा–2
- श्रीवास्तव वर्मा, डॉ. डी.एन. डॉ. प्रीति, मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी–विनोद, पुस्तक मन्दिर आगरा–2
- कपिल, डॉ. एच.के., सांख्यिकी के मूल तत्व–विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2